शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

रूद्रप्रयाग के प्रमुख धार्मिक स्थलों का विश्लेषण

प्राप्तिः 13.11.2021
स्वीकृतः 28.12.2021

डॉ० नन्दलाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय जखोली, जनपद रूद्रप्रयाग, उत्तराखण्ड़
ईमेलः *prathamnandu.uk@gmail.com*

सारांश

रूद्रप्रयाग भारत के उत्तराखण्ड राज्य का एक पर्वतीय जनपद है। रूद्रप्रयाग अलकनन्दा तथा मन्दाकिनी नदियों का संगम स्थल भी है। यह समुद्र तल से 895 मी0 ऊँचाई पर स्थित है। रूद्रप्रयाग 30^0 28′ उत्तरी अक्षांश व 78^0 98′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। प्रसिद्ध धर्मस्थल केदारनाथ धाम रूद्रप्रयाग से 91 किमी दूरी पर है। यहाँ पर भगवान रूद्रनाथ जी का मन्दिर है, इन्हीं के नाम से यहाँ का नाम रूद्रप्रयाग रखा गया। रूद्रप्रयाग अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदी के संगम पर स्थित है। मन्दाकिनी और अलकनन्दा नदियों का संगम अपने आप में एक अनोखी खूबसूरती है। इन्हें देखकर ऐसा लगता है मानों दो बहनें आपस में एक–दूसरे को गले लगा रही हों। ऐसा माना जाता है कि यहाँ संगीत उस्ताद नारद मुनि ने भगवान शिव की तपस्या की थी और नारद जी को आशीर्वाद देने के लिए भगवान शिव ने रौद्र रूप में अवतार लिया था। रूद्रप्रयाग जनपद में स्थित शिव एवं जगदम्बा मन्दिर प्रमुख धार्मिक स्थानों में से हैं।

प्रस्तावना

अलकनन्दा मन्दाकिनी के पावन संगम पर अवस्थित रूद्रप्रयाग का आदिकाल से ही अपना धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व है। किंवन्दन्ति के अनुसार यहाँ पर देवर्षि नारद ने एक शिला पर बैठकर भगवान की तपस्या की थी। भगवान शिव ने रौद्र रूप में नारद को साक्षात् दर्शन दिये लेकिन नारद जी अपनी तपस्या से विचलित नहीं हुए, जिससे भगवान शिव ने प्रसन्न होकर नारद को वीणा प्रदान की, गढ़वाल मण्डल के लगभग मध्य में स्थिल रूद्रप्रयाग पर्वतीय क्षेत्र धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विधाओं का संगम स्थल भी है। आदिकाल से ही केदारनाथ, तुंगनाथ, बद्रीनाथ, रूद्रनाथ, हेमकुण्ड साहिब, फूलों की घाटी आदि के तीर्थ यात्री अपने मुख्य पड़ाव के रूप में यहीं पर विश्राम किया करते थे, जिससे इस स्थल की राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनी। महाभारत के अनुसार– पाण्डवों ने भी इस स्थान पर विश्राम कर भगवान शिव के दर्शन की याचना की थी। भगवान शंकर ने इन्हें विविध रूपों में दर्शन दिये। जिनके साक्ष्य आज भी इस गुफा में कई शिवलिंगों का होना माना जाता है। इसी अवधारणा की परिणति यहाँ कोटेश्वर महादेव के रूप में हुई।

जनपद रूद्रप्रयाग धार्मिक रूप से देवी–देवताओं के प्रसिद्ध पीठों के रूप में प्रसिद्ध है। पंचकेदार का जहाँ धार्मिक रूप से बड़ा महत्व है वहीं इन प्रसिद्ध पंचकेदार के तीन केदार–केदारनाथ, मद्महेश्वर व तुगंनाथ इसी जनपद में स्थित हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद रूद्रप्रयाग के प्रमुख धार्मिक स्थलों का विश्लेषण किया गया है। जनपद रूद्रप्रयाग एक पर्वतीय जनपद है। उत्तराखण्ड में चारधाम यात्रा का प्रमुख तीर्थ स्थल केदारनाथ जनपद रूद्रप्रयाग में ही अवस्थित है। इसके अतिरिक्त यहाँ तुंगनाथ, मदमहेश्वर, कालीमठ, ओंकारेश्वर आदि तीर्थ स्थल हैं जो रूद्रप्रयाग के धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केन्द्र हैं। यहाँ की आय का प्रमुख स्त्रोत केदारनाथ यात्रा ही है जो पर्यटन की आय का बड़ा स्रोत है। जनपद के तीर्थाटन को किस प्रकार विकसित किया जाय इसका अध्ययन करना भी प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन को परिपूर्ण करने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए अद्यतन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है एवं आवश्यकतानुसार रेखाओं एवं मानचित्रों का प्रयोग भी किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य का रूद्रप्रयाग जनपद है। रूद्रप्रयाग जनपद उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल मण्डल में 30^0 28′ उत्तरी अक्षांश व 78^0 98′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है। रूद्रप्रयाग जनपद का क्षेत्रफल 2252 वर्ग किमी है। रूद्रप्रयाग जनपद में तीन विकासखण्ड एवं चार तहसीलें हैं।

विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी देश के उत्थान एवं विकास में वहाँ के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की बहुत बड़ी भूमिका होती हैं। एक ओर जहाँ उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का देश–विदेश मे जोर–शोर से प्रचार–प्रसार होता हैं, वहीं दूसरी और बहुमुखी पर्यटन विकास से देश एवं वहाँ के नागरिकों को उत्तरोतर लाभ भी मिलता हैं। इसके लिए वहाँ का लोक जीवन, नष्त्य, संगीत एवं धार्मिक कार्य कलाप, विदेशी पर्यटकों पर एक विशेष छाप छोड़ते हैं। किसी भी देश के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यटन से विदेशों में एक लोकप्रिय छवि बनती है और इस प्रकार उसका सांस्कृतिक परिवेश विकसित होने से देश–विदेश में उसके धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ़ होते हैं। सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रिया–कलापों के प्रभाव को जानने–समझने के लिए विदेशों से लाखों पर्यटक उस देश का प्रति वर्ष भ्रमण करते हैं।

कई पत्रकार, लेखक, समाज सेवी उस देश के विभिन्न समुदायों के धर्म–कर्म, रहन–सहन एव सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार विश्व के तमाम संचार माध्यमों में इनका अच्छा प्रचार–प्रसार होता है। और वहाँ की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत को जानने की अधिक से अधिक उत्सुकता उनमें बनी रहती है, यह एक प्रकार का ऐसा जन सम्पर्क हैं जो समस्त विश्व के देशों को सांस्कृतिक आदान–प्रदान के लिए प्रेरित करता है।

अध्ययन क्षेत्र रूद्रप्रयाग में विश्व एवं देश के प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है–

प्रमुख शिव मन्दिर केदारनाथ

केदारनाथ रूद्रप्रयाग जनपद में नागपुर परगना के पट्टी मल्ला कालीफाट में समुद्रल तल

से 3584 मी0 ऊँचाई पर स्थित मुख्य शिवधाम है। मन्दिर मन्दाकिनी के बाँये तट पर महापथ की तलहटी में स्थित है इसकी स्थिति 30^0 44′ उत्तरी अंक्षांश एवं 79^0 6′ पूर्वी देशान्तर हैं। मन्दिर नागर शैली में बना है। यहाँ शिव के 12 ज्योर्तिलिंगों मे से एक प्रमुख ज्योर्तिलिंग है, यहाँ अखण्ड ज्योति के दर्शन विशेष शुभ है। पौराणिक मान्यता के अनुसार महाभारत युद्ध के पश्चात् गोत्र हत्या से दुखी पाण्डव केदारनाथ में भगवान शिव के दर्शन के लिए आये। पाण्डवों को प्रत्यक्ष दर्शन न देकर भगवान शिव यहाँ महिषी के रूप में विचरण करने लगे, किन्तु पाण्डवों ने उन्हे पहचान लिया वे शिव का पीछा करने लगे, यह देखकर महिषी रूपी शिव भूमिगत होने लगे, तब भीम ने दौड़कर उनकी पूँछ पकड़ ली पाण्डव शिव की स्तुति करने लगे। प्रसन्न होकर भगवान शिव महिषी के पृष्ठ भाग के रूप में वहीं स्थित हो गये। तभी भगवान शिव इस क्षेत्र में ज्योर्तिलिंग के रूप में आसीन हैं।

मद्महेश्वर

चौखम्भा की गोद में समुद्रतल से 2913 मी0 ऊँचाई पर स्थित द्वितीय केदार माना जाने वाला शिव नाभि का मन्दिर मदमहेश्वर ऊखीमठ से 30 किमी0 की दूरी पर है। पंचकेदार के नाम से विख्यात शिव के पाँच पावन धाम में से मद्महेश्वर दूसरा धाम है।

तुंगनाथ

पंचकेदारों में तृतीय केदार तुंगनाथ समुद्र तल से 3625 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ भगवान शिव के बाहों की पूजा की जाती है।

ओंकारेश्वर मन्दिर (ऊखीमठ)

रूद्रप्रयाग से 42 किमी0 दूर ओंकारेश्वर शिव का प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रचलित धारणा के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण शंकराचार्य द्वारा कराया गया है। यह मन्दिर ऊखीमठ परिसर में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि बाणासुर की पुत्री ऊषा का विवाह इसी स्थान पर सम्पन्न हुआ था। केदारनाथ तथा मद्महेश्वर के कपाट बन्द होने के बाद उनकी उत्सव डोली तथा भोग पूर्ति इस गद्दी स्थल में स्थापित होती है।

विश्वनाथ मन्दिर गुप्तकाशी

विश्वनाथ मन्दिर रूद्रप्रयाग गौरीकुण्ड मार्ग पर रूद्रप्रयाग से 42 किमी दूर गुप्तकाशी में स्थित है। प्रचलित मान्यता के अनुसार (गुप्त वाराणसी) तीन काशियों–वाराणसी (काशी), उत्तरकाशी और गुप्तकाशी में से एक है। मन्दिर नागर शैली का है। यह मन्दिर समुद्र तल से 1457 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान शिव ने यहाँ गुप्त वास किया था।

कोटेश्वर महादेव मन्दिर

रूद्रप्रयाग जिला मुख्यालय से 2 किमी0 उत्तर–पूर्व की और अलकनन्दा के तट पर कोटेश्वर नामक अति प्राचीन मन्दिर गुफा के अन्दर स्थित है। इस गुफा में स्फटिक शिवलिंग है।

साणेश्वर महादेव मन्दिर

विकासखण्ड अगस्तमुनि के अन्तर्गत मन्दाकिनी के दायें पार्श्व में सिल्ला में यह प्राचीन मन्दिर है। यहाँ पर 12 वर्ष बाद महायज्ञ का आयोजन करने की परम्परा है। स्थानीय परम्परा के अनुसार यज्ञ के अवसर पर माता कुष्माण्डा को कण्डगज (कुण्ड उद्घाटन) के लिए बुलाया जाता है।

बाणासुर गढ़ मन्दिर (लमगौंडी–बामसू) गुप्तकाशी

बसुकेदार मोटरमार्ग पर प्राचीन बाणासुर मन्दिर रा0 इ0 का0 लमगौंडी से मिला है। प्रचलित

मान्यता के अनुसार यहाँ बाणासुर नामक असुर राजा की राजधानी थी और मन्दिर की स्थापना बाणासुर के द्वारा की गयी।

जमदग्नेश्वर (जामू) मन्दिर

रूद्रप्रयाग–गौरीकुण्ड मोटर र्माग पर फाटा से आधा किमी0 ऊपर जमदग्नि ऋषि का आश्रम है। प्रचलित मान्यता के अनुसार यहाँ ऋषि एवं उनकी पत्नी रेणुका ने तप किया था, शिव के प्रसन्न होने पर रेणुका ने वरदान पाया और परशुराम को जन्म दिया।

कैलाश महादेव मन्दिर

वासुकी ताल से निकलने वाली (वासुकी गंगा) और चौराबाड़ी (गांधी सरोवर) झील से निकली मन्दाकिनी का अनुपम संगम स्थल सोनप्रयाग में कैलाश महादेव और गरूड़ जी का मन्दिर स्थित है।

रूच्छ महादेव मन्दिर

रूद्रप्रयाग–गुप्तकाशी–कालीमठ सड़क मार्ग पर महाकवि कालिदास की जन्म स्थली कविल्ठा ग्राम से 4 किमी0 उत्तर दिशा की ओर रूच्छ महादेव नामक प्राचीन मन्दिर स्थित है, स्थानीय मान्यता के अनुसार इस मन्दिर के दर्शन से काशी के विश्वनाथ मन्दिर के दर्शनों का फल प्राप्त होता है।

जनपद के शक्ति पीठ

कालीमठ सिद्धपीठ

उत्तराखण्ड के प्रमुख सिद्धपीठों में कालीमठ प्रसिद्ध सिद्धपीठ है, स्थानीय मान्यता के अनुसार महाकवि कालिदास का जन्म स्थान कविल्ठा गांव यहाँ से डेढ किमी0 दूरी पर स्थित है। यहाँ पर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के मन्दिर के अलावा हरगौरी, भैरव मन्दिर, मातंग शिला प्रमुख है, मन्दिर के मध्य में एक कुण्ड है, जो रजत पट से आच्छादित है और शरदीय नवरात्रों में कालरात्रि को खोला जाता है।

काली शिला मन्दिर

रूद्रगप्रयाग–कालीमठ मोटर मार्ग पर काली शिला मन्दिर समुद्र तल से लगभग 2400 मी0 की ऊँचाई पर कालीमठ से 6 किमी0 पूरब की ओर खड़ी चढ़ाई चढ़कर ब्यूंखी गाँव मे ऊपर है। प्रचलित मान्यता के अनुसार इस शिला पर 64 यंत्र है, जिन में शक्ति पुँज पैदा होता है। स्थानीय मान्यता के अनुसार ब्रह्मा से वरदान पाकर गर्वित असुर रक्त बीज के विनाश के लिए देवी दुर्गा इसी शिला पर महाकाली के रूप में उन्होंने अपना विशाल आकृति का मुँह फैलाकर रक्त बीज को चाटना शुरू किया ताकि अन्य रक्त बीज पैदा न हों। इस तरह रक्त बीज का अन्त हुआ।

मनणी देवी मन्दिर

ऊखीमठ–जुगासू मोटर मार्ग पर जुगासू से 23 किमी0 पूर्वोत्तर क्षेत्र में राणमण्डना देवी पर्वत क्षेत्र में रणमनणी देवी मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर के पास ही खाम बुग्याल के मनमोहक पुष्प तथा सौन्दर्य पर्यटकों को आत्म विभोर कर देता है।

शाकम्बरी देवी मन्दिर

रामपुर–त्रियुगी नारायण मोटर मार्ग पर त्रियुगी नारायण से पहले शाकम्बरी देवी का मन्दिर है। एक प्राचीन मान्यता के अनुसार यहाँ पर शाकम्बरी देवी ने कन्द–मूल फल खाकर अनेक वर्षों तक तप किया था।

गौरी देवी मन्दिर

रूद्रप्रयाग–गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर गौरीकुण्ड में गौरी देवी का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर समुद्र तल से 1952 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ पर गौरी पार्वती ने प्रथम स्नान किया था। यहाँ पर गर्म जल कुण्ड और ठण्डा जल कुण्ड है।

दुर्गा देवी मन्दिर (फैगू)

गुप्तकाशी–डडोली मोटर मार्ग पर नागजगई से आधा किमी0 पूर्व दिशा में फेतु कारिणी पर्वत पर प्राचीन दुर्गा देवी का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है, इस पर्वत के शिखर पर दुर्गश्वर महादेव और 6 किमी0 की पूर्वोतर दिशा में महादेवी का मन्दिर है, फेगू दुर्गा देवी मन्दिर सम्पुर्ण भारत के सिद्धपीठों मे एक मात्र अर्द्धनारेश्वर स्वरूप का देवी मन्दिर है।

ललिता देवी मन्दिर माला

रूद्रप्रयाग–गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर गुप्तकाशी से 2 किमी0 गौरीकुण्ड मार्ग पर नाला ग्राम में (राजा नल की नगरी) नल–दमयन्ती का प्रसिद्ध मन्दिर है, और ललिता देवी का मन्दिर है।

महिषमर्दिनी देवी मन्दिर (मैखण्डा)

रूद्रप्रयाग–गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर ब्यूंग से 4 किमी0 आगे महिषखण्ड पर्वत पर महिषमर्दिनी देवी का मन्दिर है। स्थानीय मान्यता के अनुसार मैखण्डा महिषासुर दानव की राजधानी थी।

नारी देवी मन्दिर

रूद्रप्रयाग–मोहनखाल मोटर मार्ग पर सतेरा खाल से 1 किमी0 पश्चिम में नारी देवी का मन्दिर स्थित है।

राजराजेश्वरी देवी मन्दिर

चन्द्रापुरी–मोहनखाल मोटर मार्ग पर कण्डारा ग्राम में राजराजेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर है।

दुण गदेरा देवी

रूद्रप्रयाग–गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर रामपुर से 10 किमी0 पश्चिमोत्तर में दूण गदेरा देवी का प्राचीन मन्दिर है।

हरियाली देवी मन्दिर

नगरासू–डाण्डाखाल मोटर मार्ग पर जखोली ग्राम में हरियाली देवी का सिद्धपीठ मन्दिर है।

मैठाणा देवी मन्दिर

तिलवाड़ा–सौंराखाल मोटर मार्ग पर भरदार पट्टी में घेंघड़खाल से 5 किमी0 की दूरी पर मैंठाणा देवी का प्राचीन मन्दिर है, दशहरे के अवसर पर यहाँ पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

कुष्मांडा मन्दिर

रूद्रप्रयाग–गुप्तकाशी मोटर मार्ग पर पट्टी सिलगढ़ के कुमड़ी गांव में चतुर्थ कुष्माण्डा देवी का प्राचीन मन्दिर है जिन्हें नागपुर पट्टी के आराध्य भगवान अगस्त्य से उपजी दिव्य शक्ति माना जाता है।

अन्य प्रमुख मन्दिर

रूद्रप्रयाग जनपद के अन्य प्रमुख मन्दिरों में कार्तिकेय स्वामी मन्दिर, त्रियुगी नारायण मन्दिर, नारायण कोटी, उमरानारायण मन्दिर, अगस्त्यमुनि मन्दिर, चन्द्रापुरी मन्दिर, कर्मजीत मन्दिर पिल्लू,

मणिगुह मन्दिर, ऋषि रणजीत मन्दिर, नागनाथ घुणेश्वर मन्दिर, भीमसेन मन्दिर, जाख देवता मन्दिर अनिरूद्ध मन्दिर (लमगौण्डी) बौद्ध स्तूप (नाला), विंध्यवासिनी मन्दिर (देवशाल), पद्मावती मन्दिर, सिर कटा गणेश मन्दिर, चीड़वासा मन्दिर, बसुकेदार, माँ पीठासीनी देवी, माँ इन्द्रासणी मन्दिर, आदि हैं।

मन्दिर के अतिरिक्त धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अन्य स्थानों में नन्दी कुण्ड, चौराबाड़ी ताल, देवरिया ताल, बासुकीताल, पैंयाताल, देवताल, सिद्धताल, बधाणीताल, विसूड़ीताल आदि प्रमुख तीर्थस्थल रूद्रप्रयाग जनपद में अस्थित हैं।

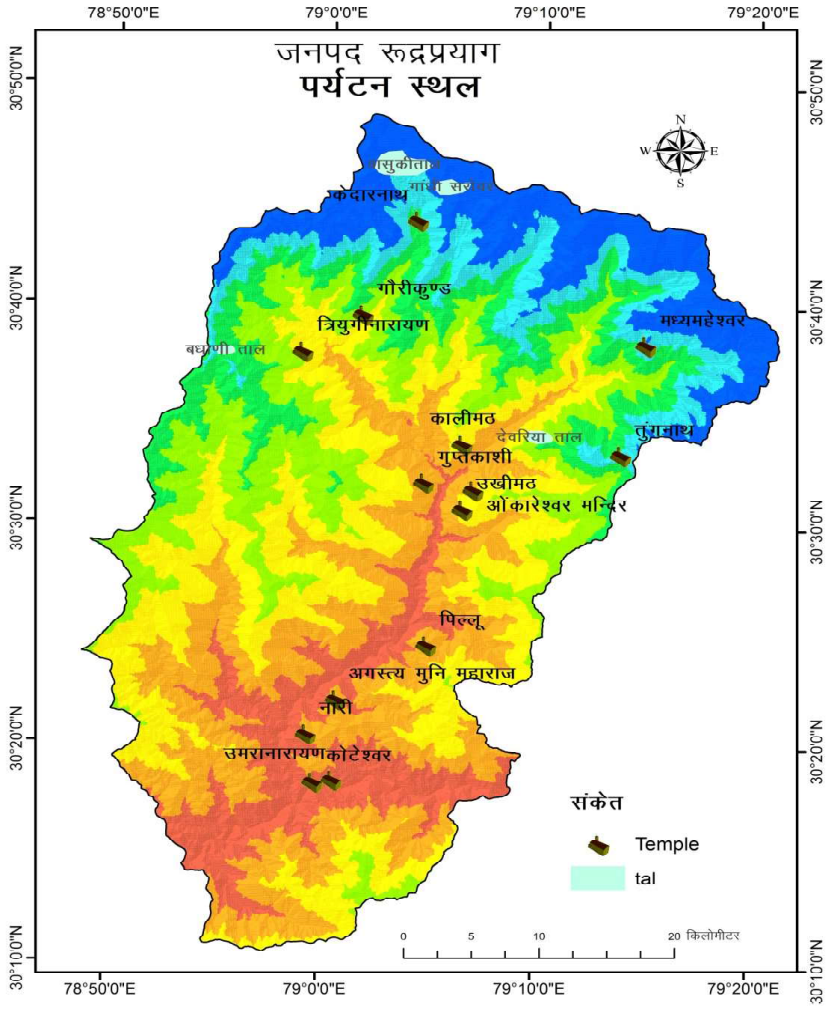

रूद्रप्रयाग जनपद में धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास में आने वाली समस्यायें

1. प्राकृतिक आपदायें–बाढ़, बादल फटना, भूस्खलन, अतिवृष्टि, भूकम्प आदि।
2. आधारभूत सुविधाओं का अभाव।

3. यातायात एवं परिवहन के साधनों का आभाव।
4. आवासीय सुविधाओं की कमी।
5. स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी।
6. दूर संचार के साधनों का अभाव।
7. अनियोजित विकास।
8. आधुनिक सुविधाओं का अभाव।
9. प्रचार–प्रसार तथा विज्ञापन की कमी।
10. पर्यटक अभिकर्ता/ट्रैवल एजेन्सियों की कमी।
11. प्रशिक्षित गाइडों का अभाव।
12. जन–जागृति का अभाव।
13. प्रदूषण।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि रूद्रप्रयाग में धार्मिक पर्यटन स्थलों का पर्यटन में विशेष महत्व है। अधिकांश पर्यटन से सम्बन्धी आय धार्मिक पर्यटक स्थलों से ही प्राप्त होती है। अगर जनपद के छोटे–छोटे रमणीक धार्मिक पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाय एवं सड़क मार्ग से दूर प्रमुख धार्मिक पर्यटक स्थलों को सड़क से जोड़ दिया जाय तथा दूरसंचार, स्वास्थ्य, आवासीय जैसी मूल सुविधाओं से जोड़ा जाय तो अधिक से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होगा और तीर्थ यात्री आसानी से सुदूरवर्ती तीर्थस्थलों का भ्रमण कर सकेंगे जिससे रोजगार के साथ–साथ यहाँ की प्राकृतिक एंव सांस्कृतिक विरासत का प्रचार–प्रसार हो सकेगा और धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ साहसिक पर्यटन में भी रूद्रप्रयाग अग्रणी बनेगा।

सन्दर्भ सूची

1. रावत, ताज, 2002 "धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यटन" तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली पृ0सं0–53
2. नेगी जगमोहन, 2004 "साहसिक पर्यटन विकास" पर्यटन मार्केटिंग एंव विकास, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, पृ0सं0–164
3. शाह सरिता, उत्तराखण्ड में आध्यात्मिक पर्यटन मन्दिर एंव तीर्थ, डायमण्ड पॉकेट बुक्स (प्रा0) लि0 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली, पृ0सं0–144–155
4. केदारखण्ड अष्ठम् अध्याय पृ0सं0–159–160
5. उनियाल धर्मानन्द, बदरी केदार की ओर, पृ0सं0–99
6. डबराल शिवप्रसाद, उत्तराखण्ड यात्रा–दर्शन, पृ0सं0–535
7. काला शंकर प्रसाद, गढवाल हिमालय में तीर्थ यात्रा एंव नया पर्यटन, पृ0सं0–47
8. जैन एंव शर्मा उपकार उत्तराखण्ड सामान्य ज्ञान पृ0सं0–48
9. चारधाम एंव हेमकुण्ड साहिब, यात्रा दिग्दर्शिका एंव सूचना निदर्शिनी
10. समग्र विकास की ओर जनपद रूद्रप्रयाग, 2008 जिला सूचना कार्यालय रूद्रप्रयाग।